आईआईएम रांची अब छात्रों को जनजातीय भाषाएं भी सिखाएगा

जरूरत व मांग को देखते हुए पाठ्यक्रमों में बदलाव

सिटी रिपोर्टर | रांची

आईआईएम, रांची अब अपने छात्रों को जनजातीय भाषाएं भी सिखाएगा। संस्थान ने वर्तमान जरूरतों और उद्योगों की मांग को देखते हुए अपने स्नातक, स्नातकोत्तर व पीएचडी कोर्सों में कई बदलाव किए हैं। इसका उद्देश्य उद्योग और समाज में आ रहे बदलावों को क्लासरूम तक लाना है। इसके तहत स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के दूसरे वर्ष में अनिवार्य विषय की जगह चयनित विषय को लाया गया है। छात्र दूसरे वर्ष के सभी टर्म में संस्थान के सभी अध्ययन क्षेत्रों से विषय का चयन कर सकेंगे। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में भी कई बदलाव किए गए हैं। एमबीए-बिजनेस एनालिटिक्स प्रोग्राम में एथिकल इश्यूज इन एआई नामक नया कोर्स और एक्जीक्यूटिव एमबीए प्रोग्राम में एथिक्स, गवर्नेंस एंड सस्टेनेबिलिटी कोर्स शुरू किया जा रहा है।

पाठ्यक्रम में ये शामिल

इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (आईपीएम) के पाठ्यक्रम में भी बहु-विषयक कार्यक्रम प्रदान करने के लिए समीक्षा की गई। इसमें ऐसे पाठ्यक्रम शामिल हैं, जो छात्रों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। आईपीएम के पहले तीन वर्षों में एनरिचमेंट इलेक्टिव नामक वैकल्पिक पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। इसके तहत सिनेमैटोग्राफी, वाटर मैनेजमेंट, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, स्टोरी टेलिंग, ह्यूमन कनेक्ट, नाटक और रंगमंच, कला और चित्रकला आदि पाठ्यक्रम शामिल हैं। आईपीएम के अंडरग्रेजुएट पार्ट के अनिवार्य पाठ्यक्रमों में बदलाव करते हुए नए पाठ्यक्रम साइंस ऑफ हैप्पीनेस, सस्टेनेबीलिटी, सोशल वर्क और ट्राइब्स इन इंडिया को जोड़ा गया है। छात्र दूसरे वर्ष में स्थानीय जनजातीय भाषा भी सीख सकेंगे।

लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज की शुरुआत

लिबरल आर्ट्स पर फोकस करते हुए लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज नामक एक नए एरिया की शुरुआत की गई है। इसे जेनरल मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटीज और अप्लाइड साइंसेज एरिया को मिलाकर बनाया गया है। साथ ही, संस्थान के स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट एरिया का नाम बदलकर स्ट्रेटेजी एंड एंटरप्रेन्योरशिप एरिया कर दिया गया है।

नौकरी में मिलेगा लाभ

आईआईएम, रांची के प्रो. अंशुमन हजारिका ने कहा- पाठ्यक्रम में बदलाव संस्थान के स्ट्रेटेजिक प्लान के तहत किया गया है, ताकि छात्र स्थानीय मुद्दे व संस्कृति को समझ सकें। इंडियन सोसाइटी व झारखंड के कल्चर से अवगत हो सके। देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकास को छात्र जान सकें, ताकि वे जब इंडस्ट्री में काम करने जाएं, तो उन्हें इसका लाभ मिल सके।

Dainik Bhaskar, 16.06.2023, Pg.5